उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005

Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांकः385 / एनआरएम / डब्लूबीएसएलएएजी / पीएल / 2021 दिनॉकः 06–06–2025

दिनांक : 06 जून, 2025 **समय : 12:00 बजे**

स्थान : उपकार सभाकक्ष **उपस्थितिः संलग्न**

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की पंचम् बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025–26 की पंचम् बैठक, डा. विनोद कुमार तिवारी, सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 06 जून, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक, गेहूं प्रजनक एवं पादप रोग वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ; सांख्यिकी विभाग; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग लखनऊ; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन वैज्ञानिक; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक तथा कीट वैज्ञानिक; बी.एच.यू., वाराणसी के वैज्ञानिकों तथा उपकार के वैज्ञानिकों / अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में विचार–विमर्श उपरांत मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गयेः–

- वर्तमान पश्चिमी विक्षोभ के पूर्वी अग्रसरण के साथ 06 जून से प्रदेश में कोई प्रभावी मौसम तंत्र सक्रिय नहीं रहने तथा निचले क्षोभ मंडल में गर्म पछुआ हवाएँ चलने से आगामी 4–5 दिनों के दौरान तापमान में 4–5 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोत्तरी होने से 9–10 जून को प्रदेश के दक्षिणी भाग बुन्देलखण्ड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकतर भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र, मध्य मैदानी क्षेत्र एवं दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग में कहीं कहीं लू चलने की संभावना है।
- आगामी सप्ताह के अंत में वर्षा की संभावना के दृष्टिगत जायद की खड़ी फसलों की कटाई अवश्य कर लें।
- जो खेत खाली हैं उन खेतों की मिट्टी पलट हल से गहरी जुताई करें जिससे मृदा में दबे / छिपे खरपतवार के बीज व कीट गर्मी से नष्ट हो जाय।
- मृदा जनित रोगों यथा तना सड़न, जड़ सड़न, झुलसा, भूरा धब्बा, बकानी, जीवाणु झुलसा, उकठा आदि से बचाव हेतु ट्राइकोडर्मा विरिडी 1 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. अथवा ट्राइकोडर्मा हरजियेनम 2 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2.5 किग्रा. प्रति हे. मात्रा 30–35 किग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छीटा देकर 8–10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से शीथ ब्लाईट, भूरा धब्बा, जीवाणु झुलसा, मिथ्या कण्डुआ आदि रोगों से बचाव किया जा सकता है।
- यदि ढैंचा पहले बोया गया हो और वह 45 दिन का हो गया उसे खेत में पलट दें।
- धान में मध्यम (130 से 140 दिन) व कम अवधि (115 से 120 दिन) की नर्सरी डालें। नर्सरी हेतु शोधित बीज का ही प्रयोग करें।
- सीमित संसाधन होने के बावजूद कृषक फास्फेटिक उर्वरक व जैविक खादों को प्रयोग अवश्य करें ताकि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी फसल को हानि कम से कम हो।
- धान की नर्सरी में पानी का तापमान बढ़ने पर क्यारी से पानी को निकालकर पुनः सिंचाई करें, सिंचाई यथासंभव सायंकाल में ही करें।
- जायद फसलों, सब्जियों एवं फलदार यथा आम व लीची के बागों में वृक्षों में आवश्यकतानुसार नमी बनाये रखें।
- प्रदेश की जलवायु मक्के में फॉल आर्मी वर्म के लिये अनुकूल है। इस कीट की प्रथम अवस्था सूंडी (लार्वा) सर्वाधिक हानिकारक होती है। इसके जैविक नियंत्रण हेतु एन.पी.वी. 250 एल.ई. अथवा मेटाराइजियम एनिप्सोली 5 ग्रा. प्रति ली. अथवा बैसिलस थुरिनजैनेसिस 2 ग्रा. प्रति ली. की दर से प्रयोग करना लाभकारी होता है।
- वर्तमान मौसम में तापमान अधिक होने के कारण पशुओं में डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती हैं। इससे बचाव हेतु पशुओं को खनिज–लवण मिक्चर खिलायें।
- मुर्गियों में बर्ड फ्लू के लक्षण दिखाई देने पर पास के पशुचिकित्सालयों पर तुरंत सम्पर्क करें व ऐसी मुर्गियों को अन्य मुर्गियों / जानवरों से अलग कर दें।

आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (06–12 जून, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के अंतिम चरण में 11 एवं 12 जून को पूर्वी उत्तर प्रदेश में कहीं– कहीं मेघगर्जन/वज्रपात के साथ छिटपुट वर्षा होने जबकि शेष दिनों में अन्य कृषि जलवायु अंचलों में मौसम शुष्क रहने की संभावना है। प्रदेश के उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री से.) अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री से., भाभर तराई क्षेत्र के शेष भाग, पश्चिमी मैदानी, मध्य पश्चिमी मैदानी, उत्तर–पूर्वी मैदानी एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा पूर्वी मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 38 से 40 डिग्री से. जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 40 से 42 डिग्री से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री से., पश्चिमी मैदानी, मध्य पश्चिमी मैदानी एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 24 से 26 डिग्री से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 26 से 28 डिग्री से. रहने की संभावना है।

धान की खेती

- धान की सीधी बुआई वाले खेतों की तैयारी करें।
- धान के बेहन के लिये 30 किग्रा0 बीज प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- उपरहार भूमि के लिए धान की किस्मों यथा एन.डी.आर. 97, एन.डी.आर. 118, एम.टी.यू. 1010, शुष्क सम्राट, सहभागी के 30 किग्रा0/हे0 बीज की दर से नर्सरी डालें।
- सुगन्धित धान के लिए पूसा नरेन्द्र कालानमक–1, पूसा सी.आर.डी.कालानमक–2, पूसा–1637, एच.यू.आर. –1309, कस्तूरी, मालवीय सुगंध धान–1, एच.यू.आर.–1304 एवं नरेन्द्र लालमती धान के बीज को प्रयोग करें।
- अचानक बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों के लिए आई.आर. 64–सब 1 (पकने की अवधि 110 दिन) एवं सॉभा महसूरी–सब 1 (पकने की अवधि 145 दिन) धान के बीज को प्रयोग करें।
- 20 से 25 दिन वाली पौध की रोपाई 2 से 3 पौधा प्रति हिल 3 से 4 से.मी. की गहराई तक करें।
- धान की **कम अवधि** की उन्नत किस्मों सी.ओ.–51, नरेन्द्र–80, आई.आर.–50, नरेन्द्र–97, पंत धान–12, बारानी दीप, शुष्क सम्राट, नरेन्द्र लालमती, मालवीय धान–2, मालवीय धान–917, शियाट्स धान–5 तथा **मध्यम अवधि** की किस्मों नरेन्द्र–359, पंत धान–10, मालवीय धान–1, एन.डी.आर.–9930111, सीता, सरजू–52, पंत धान–4, शियाट्स धान–1, शियाट्स धान–2, शियाट्स धान–4, आई.आर.–64 सब–1, नरेन्द्र धान–2065, नरेन्द्र धान–3112–1, मालवीय धान–36 की नर्सरी डालें।
- **ऊसर क्षेत्रों** हेतु धान की मध्यम अवधि की किस्मों सी.एस.आर.–10, सी.एस.आर.–43, सी.एस.आर.–13, सी. एस.आर.–36, सी.एस.आर.–46, सी.एस.आर.–60, नरेन्द्र ऊसर धान–2009 की नर्सरी डालें।
- नर्सरी में जिंक की कमी के कारण होने वाले खैरा रोग जिसमें पत्तियां पीली पड़ जाती है एवं बाद में कत्थई रंग के धब्बे पड़ जाते है, लक्षण दिखाई देने पर इसके नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल के साथ अथवा 2.5 कि.ग्रा. बुझे चूने को प्रति हे. लगभग 1000 लीटर पानी के घोल के साथ छिड़काव करें।
- नर्सरी में लौह तत्व की कमी के कारण होने वाले सफेदा रोग, जिसमें पत्तियां कागज के समान सफेद रंग की निकलती है, के नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. फेरस सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल अथवा 2.5 कि. ग्रा. बुझे चूने को प्रति हे. लगभग 1000 लीटर पानी घोल के साथ छिड़काव करें।

अरहर की खेती

- सिंचित क्षेत्रों में पश्चिमी उ.प्र. हेतु अरहर की अगेती संस्तुत प्रजाति पारस (पी.ए.–291), मध्य उत्तर प्रदेश हेतु पूसा अरहर–16, सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों यू.पी.ए.एस.–120, टा–21 तथा पूसा–992, पी.ए.–6 की बुवाई 10 जून तक समाप्त करें।

- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम, एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा + 1 ग्राम कारबाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले हर बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

श्री अन्न की खेती

- सावां एवं कोंदो की बुवाई का उत्तम समय 15 जून से है।
- इसके खेत की तैयारी के लिये मानसून के प्रारंभ होने से पूर्व खेत की जुताई अवश्य करें जिससे खेत में नमी की मात्रा संरक्षित हो सकें।
- सावां की बुवाई हेतु प्रजाति टी–46, आई.पी.–149, यू.पी.टी.–8, आई.पी.एम.–97, आई.पी.एम.–100, डी.एच. बी.एम.–93–3, डी.एच.बी.एम.–33–3 के बीज का प्रबंध करें।
- कोंदो की बुवाई के लिये जे.के.–6, जे.के.–62, जे.के.–2, ए.पी.के.–1, जे.पी.वी.के.–3 के बीज का प्रबंध करें।
- कोंदो में बीज जनित रोग अरगट की रोकथाम हेतु बीज को बोने से पहले 20 प्रतिशत नमक के घोल में डुबोकर तुरंत अरगट से ग्रसित बीजों को अलग कर दें तथा शुद्ध पानी से 4 से 5 बार धोकर बीज का प्रयोग करें।

जायद फसलों की खेती

- उर्द/मूंग की फसल में पीला चित्रवर्ण (मोजैक) रोग दिखाई देते ही प्रभावित पौधे सावधानीपूर्वक उखाड़ कर नष्ट (जला दे/गाड़ दें) कर दें।

मक्का की खेती

- जायद मक्का की खड़ी फसल में हल्की सिंचाई कर नमी बनाये रखें। तना छेदक का प्रकोप दिखाई देने पर इसकी रोकथाम हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट एस.जी. 200 ग्राम प्रति एकड़ की दर से 250–300 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रयोग करें।
- देर से पकने वाली मक्का की बुवाई मध्य जून तक पलेवा करके करें। देर से पकने वाली (95 दिन से अधिक) किस्मों यथा; एच.क्यू.पी.एम.–4, एच.एम.एच.–3904, पी.एम.एच.–3, एच.क्यू.पी.एम.स.–5, एन.के.–61, एच.क्यू.पी.एम.–1, सीड टेक–2324 तथा बुलंद आदि की बुवाई करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बोने से पूर्व 1 किग्रा0 बीज को 4–6 ग्रा0 ट्राइकोडर्मा प्रति किग्रा0 बीज अथवा 2.5 ग्रा. थीरम या 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से शोधित करें।

गन्ना की खेती

- गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई कर नमी बनाये रखें तथा खरपतवार नियंत्रण हेतु गुड़ाई करें।
- गन्ने में काला चिटका के प्रकोप की दशा में प्रोफेनोफॉस 10 प्रतिशत + साइपरमेन्थ्रीन 4 प्रतिशत का 750 मिली0 अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत के 200 मिली0 650 ली0 पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- शरदकालीन गन्ने में पर्याप्त कल्ले होने पर अवांछित कल्लों को निकलने से रोकने के लिये मिट्टी चढ़ा दें।
- पेड़ी फसल में अधिक पैदावार लेने हेतु सिंचाई, उर्वरक प्रबंधन एवं निराई गुड़ाई समय समय पर करें।
- बसंतकालीन गन्ने में सिंचाई पश्चात् 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति एकड़ की दर से टापड्रेसिंग कर गुड़ाई करें।
- चोटीबेधक कीट के नियंत्रण हेतु ग्रसित नवजात पौधे को जमीन की सतह से काटकर नष्ट कर दें अत्यधिक प्रकोप की दशा में क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.5 एस.सी. के 150 मि.ली. कीटनाशक को 400 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से ड्रेचिंग कर सिंचाई करें।
- जिन किसान भाइयों ने गन्ने के साथ अन्तः फसल के रूप में दलहनी फसलों यथा मूंग, उर्द एवं लोबिया की बुआई की है। समय–समय पर सिंचाई, खरपतवार प्रबन्धन एवं कीट प्रबन्धन करते रहें।

सब्जियों की खेती

- हल्दी बीज की बुवाई जून माह में पूर्ण कर लें।
- भिण्डी में पीत शिरा मोजैक कीट की रोकथाम के लिए प्रभावित पौधे उखाड़कर जला दें या मिट्टी में दबा दें तथा नीला चिपचिपा ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे0 लगायें। इसके रासायनिक उपचार में इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

- भिण्डी की शाखा एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप 5 प्रति हेक्टर फसल में 6 से 12 इंच ऊपर लगायें अथवा फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 प्रतिशत एस.सी. की 2.0 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों में यदि हरा फुदका कीट 10 की संख्या में प्रति हिल दिखाई दे तो फल तुड़ाई उपरान्त फसल पर इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मिली. जबकि तना व फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिए फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 प्रतिशत एस.सी. की 1.0 मिली. को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों को फल मक्खी से बचाने हेतु मेथाइल यूजीनॉल क्यूल्योर फेरोमोन ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 की दर से लगायें।

<u>बागवानी</u>

- आम के बागों में निश्चित समय अन्तराल पर सिंचाई कर नमी बनाये रखें।
- आम के फलों को समान रूप से पकाने के लिए 10 किलोग्राम फल को 10 लीटर पानी में 3.0 से 18.75 मिली0 इथरेल के साथ 52 $\pm$ 2^0 सेन्टीग्रेड तापमान पर 5 मिनट तक डुबोयें। इथरेल की मात्रा फलों की परिपक्वता पर निर्भर करती है। परिपक्वता काल पूर्व तोड़े गये फलों में इथरेल की अधिकतम मात्रा 18.75 मिली0, कम परिपक्व फलों में 12.5 मिली0 एवं परिपक्व फलों में 3–6.25 मिली0 इथरेल का प्रयोग करें। एक बार तैयार किये गये घोल को 4 बार प्रयोग किया जा सकता है। उपचारित फलों को हवा में सूखाकर डिब्बा बन्दी की जाती है। 4–6 दिन में सामान्य तापक्रम पर पीला आकर्षक रंग लिये हुए फल पक कर तैयार हो जाते हैं।
- जीर्णोद्धार किये गये वृक्षों में कृन्तित शाखाओं पर मार्च–अप्रैल माह में ढेर सारे नये कल्ले निकलते हैं, जिनका वांछित विरलीकरण जून माह में करने के उपरान्त फफूंदनाशक दवा कॉपरआक्सीक्लोराइड (3 ग्राम प्रति लीटर पानी में) घोल बनाकर छिडकाव करना आश्वयक है।
- फलों के बाग के रोपड़ हेतु मई माह में खोदे गये गढ्ढों की भराई करने के लिए ऊपर की आधी मिट्टी में गोबर की सड़ी हुई खाद को मिलाकर जमीन की सतह से 15 से 20 सेन्टीमीटर ऊपर तक भराई कर लें।
- सिंचाई की प्रर्याप्त व्यवस्था होने पर मई माह में खोदे गये गढ्ढों की भराई करने के बाद सिंचाई उपरान्त केला एवं पपीता के पौधों का रोपड़ गढ्ढे के मध्य में जून माह में 1.8X1.8 मीटर की दूरी पर करें।
- आम एवं अमरूद में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यू ल्योर ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 में 6 से 8 फिट की उचांई पर टहनियों में बांध कर लटकाए तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा 20–25 दिन के अन्तराल पर ल्योर को बदलते रहना चाहिए।

<u>पशुपालन</u>

- राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत गलाघोंटू बीमारी का टीकाकरण प्रत्येक जनपद के समस्त पशुचिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जा रहा है जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य चिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशु चिकित्सा अधिकारी से सम्पर्क कर उठा सकते है।
- पशुओं को मुरझाया हुआ हरा चारा (विशेष रूप से ज्वार) ना खिलायें क्योंकि इसमें एच.सी.एन. तत्व (जहरीला तत्व) की अधिकता से पशु बीमार हो सकते हैं।
- वर्तमान मौसम में तापमान अधिक होने के कारण पशुओं में डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती हैं। इससे बचाव हेतु पशुओं को खनिज–लवण मिक्चर खिलायें।
- मुर्गियों में बर्ड फ्लू के लक्षण दिखाई देने पर पास के पशुचिकित्सालयों पर तुरंत सम्पर्क करें व ऐसी मुर्गियों को अन्य मुर्गियों/जानवरों से अलग कर दें।
- पशुओं को हरे चारे जैसे ज्वार, बाजरा व चरी पर्याप्त नमी वाले खेतों की ही खिलायें। हरे चारे हेतु चारे की कटाई जड़ से 6 इंच ऊपर ही करें।

- राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत पशुओं में एफ.एम.डी. एवं बी.क्यू. बीमारी का टीकाकरण कराया जा रहा है। यह सुविधा पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें उनको 60:40 के अनुपात में सूखा एवं हरा चारा मिलाकर खिलायें।
- बदलते मौसम में पशुओं को अंतः कृमिनाशक एवं बाह्य परजीवीनाशक पशुचिकित्सक की सलाह तथा गोबर की जांच उपरांत आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।
- राष्ट्रीय पशुधन बीमा योजना के अन्तर्गत पशुपालकों को अपने पशुओं का बीमा बीमा कंपनी द्वारा निर्धारित दर से 85 प्रतिशत छूट पर किया जा सकता है जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी से सम्पर्क कर उठा सकते है।

मत्स्य पालन

- मत्स्य प्रजनकों की उचित देखभाल करें।
- भारतीय/विदेशी कार्प मछलियों का प्रजनन प्रारम्भ कर दें।
- हैचरी/हॉपा ब्रिडिंग के प्रबंधन एवं संचालन के लिए विशेषज्ञों से समय–समय पर सलाह लेते रहें।
- मत्स्य बीज संचयन से पूर्व तालाब की तैयारी जैसे–जलीय खरपतवार की निकासी, जलीय कीटों तथा अवांछित मछलियों का उन्मूलन कर लें।
- हैचरियों से स्पॉन प्राप्त कर नर्सरी तालाबों में संचयन करें।
- मत्स्य बीज परिवहन दिन के कम तापमान वाले समय में करें।
- मौसम खराब रहने यानि अत्यधिक गर्मी, आद्रता, वर्षा रहने पर भोजन का प्रयोग आधा कर दें।

रेशम पालन

- अर्जुन नर्सरी उत्पादन के लिए बालू, मिट्टी एवं गोबर की खाद का मिश्रण तैयार कर पालीथीन बैग में भराई का कार्य करें।

वानिकी

- गड्ढा भरान इस सप्ताह तक पूर्ण कर लें। वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर लें।
- आग से बचाव के प्रबन्ध करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 12 जून, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः–

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं। क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हों तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(विनोद कुमार तिवारी)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

<u>प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।</u>

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।

39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

(**विनोद कुमार तिवारी**)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की पांचवीं बैठक दिनांक 06 जून, 2025 की उपस्थिति

1. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
2. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
3. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
4. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या (ऑनलाइन)।
5. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आवजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
6. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
7. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
8. डा. प्रिया रंजन, बी.एच.यू. (ऑनलाइन)।
9. डा. समीर कुमार विश्वास, प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
10. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
11. डा. सोमवीर सिंह, सह प्राध्यापक, अनुवांषिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
12. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
13. डा. राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
14. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ
15. श्री अजय कुमार मिश्रा, तकनीकी अधिकारी, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
16. श्री प्रतीक कुमार, तकनीकी अधिकारी, शुआट्स, प्रयागराज।
17. श्री नपेन्द्र सिंह, चारा सहायक, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।